Interview no. 1

श्री विश्वनाथ VISHWANATH

मधुरेश - अंकल जी, आप क्या काम करते हैं? और दिल्ली में आने के बाद कहाँ-कहाँ काम किया है आपने?

मैं तो फिलहाल खाली बैठा हूं मेरी कंपनी close है और salary मेरी चार महीने में एक बार मिलती है। काम नहीं चलता है बैठ कर खा रहे हैं हम। और इसके बाद केस भी लगा रखा है ~~हमारे~~ हमने कोर्ट में कि मजदूरी हमें पूरी मिलनी चाहिए आगे देखते हैं कि क्या होता है?

currently unemployed factory closed for 4 months imposed case for salary [illegible] Delhi [illegible]

Actually दिल्ली में आने के बाद हमने एक हलवाई कि दुकान पर काम किया उसके बाद २२-२४ साल से हम यहाँ पर काम कर रहे हैं

प्र० तो क्या आप Campa cola factory में ही काम कर रहे हैं हलवाई की दुकान के बाद?

→ हाँ मैं तब से यहीं पर काम कर रहा हूं। और मेरी २२ साल की service हो चुकी है

प्र० सरकारी फर्म है ये?

→ नहीं Pvt. Ltd. है सरदार चरनजीत सिंह की है।

प्र० वहाँ किस तरह का काम होता था उसके बारे में हमें कुछ बतायें?

वहाँ पानी बनता था Campa Cola और हम वहाँ supply करते थे। marketing का काम था हमारा। market में supply करते थे।

प्र० वहाँ के बारे में और कुछ बतायें? कितने लोग काम करते थे और किस तरह के लोग काम करते थे?

— वहाँ तकरीबन २-२½ हजार लोग काम करते थे, और जब से काम बंद हुआ है तब से बहुत लोग जो daily wages के थे वे काम छोड़ दिये हैं, और कुछ retire हुए हैं। फिर भी अभी 650 लोग काम करते हैं। रोज जाते हैं और अपनी duty लगाते हैं।

प्र० अच्छा तो पेंशन का भी है इसमें?
पेंशन अभी लागू नहीं हुई है। govt पैसा काट रही है लेकिन अभी लागू किसी को नहीं हुई है।
– मतलब आगे मिलेगा?
हाँ, उम्मीद है शायद 2003 तक मिलेगा ऐसा कहते हैं।
– तो ये कंपनी बंद होने के बाद worker लोगों ने ऐसा कोई Union बनाया है या केस चलाया है?
union है हमारी मगर case अभी कुछ ऐसा नहीं बनाया है। case SC में डाला है कि हमें salary मिलनी चाहिए या हमारा हिसाब कर दें हम मालिक से अपना हिसाब माँग रहे हैं हिसाब देते नहीं वो। और हमने case डाल रखा है कि हमारी dues मिलना चाहिए। 5 साल की वर्दीयाँ हमारी नहीं मिली हैं और 2 साल का bonus बाकी है और बहुत सारी चीजें हैं LTC है हमारा।
– आप पिछले 22 सालों से यहाँ काम कर रहे हैं तो आपको मालूम होगा कि 87 में यहाँ हड़ताल हुई थी उसके बारे में कुछ बताएंगे। क्या आपकी factory में भी हड़ताल हुई थी?
नहीं हमारी company में नहीं। उस समय नहीं
– तो पहले कभी हुआ?
पहले 1973 में हड़ताल हुई थी एक बार उसके बाद कोई हड़ताल नहीं हुई।
– अच्छा जो लोग यहाँ काम करते हैं वे कहाँ से आए हैं और या फिर temporary हैं permanent हैं ~~या फिर~~ मतलब जो कोई भी रख रहे थे वे permanent थे।
नहीं, सब permanent हैं। राजस्थान से हैं UP के ज्यादा हैं, हरियाणा के भी हैं ऐसे सभी जगह के हैं कुछ AP के हैं कुछ कर्णाटक

के हैं सभी प्रांतों के लोग हैं। पंजाब के भी हैं।

– temporary या permanent

सब permanent, temporary कोई नहीं है।

– वहाँ आपको payment कितनी मिलती है?

वहाँ हमको payment मिलती है तीन हजार

– बाकी लोगों का स्केल क्या है?

2000 है, 2500 है, 3000 है और बाकी 20% बोनस है, वहाँ है, ITC है सबकुछ है मगर अभी कुछ नहीं है।

– अच्छा अब ये बताइये कि अभी आप यहाँ रह रहे हैं इसके पहले आप कहाँ रहते थे?

यहाँ से पहले मैं पहाड़गंज में था उसके बाद फिर मंगोलपुरी में बनाया उसके बाद अभी मैं यहाँ पर 58 नं० रामा रोड़ में हूँ। यहाँ मुझे... 1981-82 से हूँ।

– तो इस जगह के बारे में कुछ बताइये। कैसे लोग हैं, क्या करते हैं?

यहाँ पर ज्यादातर लोग बिहार और UP के हैं। फैक्ट्रियों में मजदूरी करते हैं, बेचारे। Govt में 1-2% ही होगा बाकी सब ऐसे ही हैं।

– यहाँ के वातावरण के बारे में बताइये, बच्चों की पढ़ाई वगैरह-वगैरह।

यहाँ तो पढ़ाई के basis में कुछ भी नहीं है। पढ़ाई का वातावरण नहीं है यहाँ पर। बच्चों को पढ़ाई मिल नहीं पाती है। बच्चों के माता-पिता गाँव की तरह ही रहते हैं। फिलहाल मेरा ही एक लड़का है उसको पढ़ाने की बहुत कोशिश कर रहा हूँ। वह भी परेशान है यहाँ रहने के कारण। हमारी मजबूरी है। हमारे पास इतने पैसे नहीं हैं कि उसको कहीं बाहर कमरा लेकर दें। हम चाहते हैं कि वह पढ़ाई करे अच्छी तरक्की करे पर

हर आदमी यह नहीं सोचता यहाँ सब अपने गाँव से आए हैं मतलब होश का आए हैं सब यही सोचता है कि हमारा लड़का जवान है नौकरी करेगा फिलहाल मेरा ऐसा कोई विचार नहीं है। सोचता हूँ पढ़ाई लिखा कर एक कामयाब इंसान बनाऊँ। अच्छी service हो, अच्छा post हो ये सब कहाँ तक संभव है देखिए।

- तो अपनी family के बारे में बताइये। आपकी शादी कब हुई? आपके कितने बच्चे हैं?

बच्चे मेरे 3 हैं सारे बालिग हैं। शादी हुई थी 1975 में गौना हुआ था मेरा। शादी तो मुझे भी पता नहीं कब हुई थी। और तब से फैमिली साथ लेकर ही चल रहा हूँ और आगे भी चलूँगा। पाँच भाई हैं मेरे और पाँचों में मैं सबसे बड़ा हूँ। चारों भाइयों की शादी की है मैंने उनका घर बसाया है और अभी वे सभी कमा खा रहे हैं।

- सभी गाँव में ही हैं?

हाँ सब गाँव में ही हैं। एक भाई यहाँ रहता है वह दिहाड़ी का काम करता है।

- daily wage पर

हाँ, daily wage पर

- और बाकी भाई।

बाकी 3 भाई गाँव में ही और माताजी भी हैं। मैं ससुराल में रहता हूँ वहाँ कोई है नहीं।

- वे तीनों क्या करते हैं?

गाँव में थोड़ी बहुत खेती है वही देखते हैं उसी से गुजारा चलता है।

- बाकी दोनों बच्चों के बारे में बताइये। एक तो विजय है बाकी

हाँ ~~एक~~ विजय पढ़ाई करता है

MA कर रहा है DU से दूसरी दसवीं में है परीक्षा दी है उसने अभी, एक लड़की भी है दसवीं में उसकी शादी कर दी है।

— आमतौर पर देखा जाता है कि आप जैसे तबके के लोग पढ़ाई लिखाई पर ज्यादा ध्यान नहीं देते। फिर आपको कैसे लगा कि पढ़ाई लिखाई पर ध्यान देना चाहिए?

मैं तो मुझे campa में नौकरी करने से knowledge हुआ मैं salesman की नौकरी करता था तो supply करने के लिए बड़े-बड़े जगह जाया करता था। बड़े बड़े होटलों में भी गया जैसे Oberoi हुआ Ashoka हुआ। बड़े-बड़े लोगों के यहां भी गया। DM की कोठी पर भी supply दिया अच्छे-अच्छे लोगों के साथ खाना-पिना है उठे-बैठे हैं तभी knowledge हुआ और लगा कि गाँव से आए हैं अगर दिल्ली जैसी जगह में रहकर बच्चों को पढ़ा लिखाकर कुछ नहीं बनाया तो बेकार है। हम तो जहाँ तक है ठीक है पर बच्चों को पढ़ाएं लिखाएं ताकि आगे चलकर वे तरक्की करें।

— एक बात बताइये अभी मार्केट में कई सारी कंपनियाँ आ गई है जैसे Pepsi, Coca-cola और आपकी कंपनी Campa-cola, जो की काफी पुरानी है - आप इसमें 22 साल से काम कर रहे हैं - तो Campa पर क्या असर पड़ा है। उसके Sale पर क्या असर पड़ा है मुख्य तौर से आपके उपर क्या प्रभाव पड़ा है?

देखिए, एक बात है हिन्दुस्तान के लोग बहुत नकलची है हमारी तरह हमने भी अपने बच्चों को पढ़ाने के लिए अंग्रेजी स्कूल भेजा। तो हम नकलची लोग अपनी जमीन छोड़ कर दूसरे की जमीन पर भागते है। अब Pepsi और Coke विदेशी कंपनी है उसका स्वाद भी

Campa-cola से बेहतर नहीं है फिर भी लोग उसे ही पीते हैं। अब देखो लोगों को विदेशी साबुन इस्तेमाल करते हैं पर अपना नहीं करते।

वैसे ही pepsi, coke आने से हमारी कंपनी को काफी घाटा हुआ है अब सिर्फ 10%. काम चलता है जितना पहले चलता था उसका सिर्फ 10%. काम बिलकुल बंद हो गया है। घाटे में ही कंपनी चल रही है।

– अच्छा जब आपने काम शुरु किया था तब कितने पैसे मिलते थे और घर चलाने में पहले ज्यादा मुश्किल होती थी या आज?

जब हमने काम शुरु किया था तब हमें 175 रु. मिलते थे जब मैं नौकरी पर लगा। धीरे-धीरे कभी 30 रु. या 50 रु. ऐसे तरक्की होती थी। अभी तो 3000 रु. भी मिल जाए तो भी मुश्किल होती है। पहले ज्यादा आसानी से काम चलता था। 1984 के बाद कोई govt ने ध्यान ही नहीं दिया। महंगाई बहुत ज्यादा हो गई है। गरीब आदमी खाना खाता है कैसे रहता है? कोई देखने वाला नहीं है। इंदिरा गांधी के बाद किसी ने ध्यान ही नहीं दिया।

– तो क्या यह महंगाई किसी एक पार्टी के साथ है? भाजपा या कांग्रेस या कोई और — आप किसको दोषी मानते हैं?

मैं तो कहता हूं कि 1984 में इंदिरा गांधी के मरने के बाद किसी ने ध्यान ही नहीं दिया कि गरीब आदमी का गुजारा कैसे चलता है। किसान को ही ले लीजिए 500 की बोरी खरीदने के लिए पैसे नहीं है तो वो खेती कैसे करे। उसका गेहूं बिकता है 3 रु. किलो। लोग उनसे

खरीदते हैं सस्ते रेटों में और बेचते हैं महंगे दाम पर। जैसे दिल्ली में यहां 11रु. चावल हम खरीदते हैं। गाँव में बनिये से खरीदने पर 5-6रु. में first class चावल मिलता है। हमारी तनख्वाह जितनी मिलती है उसमें गुजारा होता नहीं है। एक फैक्ट्री वाला अगर आदमी लगाता है तो 2500-3000 रु. तक देगा। बहुत अच्छा होगा तो 2500 रु. देगा। labour class को ज्यादा से ज्यादा 1000-1200 रु. देगा। उसमें क्या गुजारा करेगा गरीब आदमी। बहुत मुश्किल होती है।

— अच्छा तो अभी जहां आप रह रहे हैं इन झुग्गी झोपड़ियों में कुछ समस्यायें होंगी पानी की, बिजली की या कैसे लोग रहते हैं — अच्छा पहले समस्याओं के बारे में बताइये।

यहां पर समस्या है बहुत ज्यादा पानी की। बिजली की भी है। Govt बिजली देना नहीं चाहती है। यहां पर बिजली इधर उधर से आती है पर मौके पर रहती नहीं है, बहुत दिक्कत है। या तो govt meter लगा दे तो आदमी complaint भी कर सकता है। ऐसे भी गरीब आदमी के पास पैसे तो होते नहीं हैं। Govt. बोलती तो बहुत है कि झुग्गी वालों को काफी सुविधा दे रखी है। ना तो हमारे यहां पानी की सुविधा है, बिजली की सुविधा है, latrine तक की सुविधा नहीं है। औरतें बाहर बैठती हैं उस पर भी govt. का ध्यान नहीं है। एक-दो latrine बना रखा है उस पर govt. का ध्यान नहीं है। कभी पानी नहीं है तो डिब्बा नहीं है कुछ भी नहीं है।

– तो आप एक बात बताइये, govt. बहुत बार बोलती है कि इन झुग्गियों में बहुत असामाजिक तत्व रहते हैं गलत काम करते हैं। तो क्या इसमें कुछ सच्चाई है?

ऐसा तो हमारे यहां 58 नं. में नहीं है। लड़ाई झगड़ा अगर आज के नये लड़के कर लें तो अलग बात है पर झगड़ा नहीं होता है। 1% झगड़ा हो जाता है पर छोटे-मोटे झगड़े कहां नहीं होते।

– बाकी झुग्गी झोपड़ियों में क्या है?

अब इन झुग्गियों में तो कोई सुविधा है नहीं। हम गाँव से आते हैं सोचकर कि कुछ पैसे कमायेंगे हम सोचते हैं कि अच्छा पैसा कमायेंगे ढंग से रहेंगे। पर यहाँ आने के बाद मजबूर होकर हमें, किसी line के ~~किसने~~ किनारे, किसी खड्डे के किनारे अपनी झुग्गी डालकर रहना पड़ता है। मजबूर होना पड़ता है। वो आदमी कहां तक आगे बढ़ेगा। उसके विचार कहां तक बढ़ेंगे। उसे अच्छा पैसा तो मिलता नहीं। अच्छा काम तो मिलता नहीं कि वह आगे बढ़ सके किसी अच्छी जगह कमरा लेकर रह सके।

– ~~[illegible]~~ इसलिए लोग क्या बदमाशी करते हैं?
हाँ

– अच्छा, जब मैं यहां लोगों से बात कर रहा था, तो उन्होंने बताया कि यहां भी जातिवाद चलता है तो क्या यह सच है?

हां, जातिवाद तो सब जगह चलता है। govt. को ही देखिए नाम को जातिवाद मिटाना चाहता है। पर जब election होता है जाति के अनुसार ही candidate खड़ा करता है। जिस area में जिस जाति के

लोग होते हैं, वही उसी जाति का candidate खड़ा करता है अपनी seat बचाने के लिए करता है। अब जैसे नेता लोग Parliament में मैं सब करते हैं, तो हम क्यूँ नहीं करेंगे? करेंगे ही करेंगे। हमलोग तो आम आदमी हैं करेंगे ही करेंगे। भेदभाव तो सब जगह चलता है उसको मिटाना बड़ा ही मुश्किल काम है।

— अच्छा, आप दिल्ली क्यों आए? और जब दिल्ली आए तो आपको कैसा लगा? उसके बारे में कुछ बताएंगे?

मैं बहुत छोटी उम्र में आ गया था पाँचवी पढ़ के आया था (थोड़ा हँसता है) गाँव में भेड़ बकरी चराते थे, गुल्ली डंडा खेलते थे यहाँ आए तो अच्छा लगा। यहाँ बड़ी बड़ी गाड़ियाँ थी, सड़कें अच्छी थी, बड़े बड़े बिल्डींग थी कुछ तो राहत मिला ही। गाँव में ऐसा कुछ भी नहीं था अब थोड़ी हालत सुधरी तो है। उस वक्त हमने भी कमाया और अपना शौक भी पूरा किया है। आजकल वो शौक पूरा नहीं कर सकते। आजकल जो कमाते हैं वो सिर्फ बनिये को देने के लिए होता है। ऐसे में कोई शौक पूरा नहीं हो सकता।

— कौन से शौक?

जैसे देख लिजिए हमारा दिल करता है कि आज सिनेमा हॉल में family के साथ फिल्म देखें अब हमारी फैमिली में 5 member हैं एक टिकट आता है 50 रु. का तो 250 रु. तो सिर्फ टिकट का हो गया। उतनी तो हमारी दिहाड़ी ही नहीं है तो हमारा शौक पूरा ही नहीं होगा ... हमारा शौक

पूरा होती नहीं सकता। पहले हो जाता था।
टिकट 1¼ रु. का होता था। परन्तु पाँच रुपये
का high class का टिकट होता था। उस
समय हमारा शौक पूरा हो जाता था।
शोले फिल्म जब लगी थी उस समय सस्ती
टिकट थी परन्तु 60 पैसे की अब 75 रु. की
आती है तो शौक कहाँ से पूरा होगा।
टेलीविज़न में फिल्में आती है वहीं देखते
है शौक पूरा हो जाता है। जिनके पास है
वो अपने घर पर देखते हैं जिनके पास नहीं
है वो एक दूसरे के घर जाकर देखते है।
पूरा हो जाता है शौक हम घूमने भी नहीं जा सकते।
पहले एक लीडर थे हमारे
58 नं. के एक मदन लाल खुराना जी उनका
कहना था DTC govt की सेवा है
इसमें profit नहीं होना चाहिए उस समय
BJP का राज नहीं था कांग्रेस का राज था।
इसमें 10 पैसे की टिकट होनी चाहिए 50
पैसे की टिकट हो। आज 8 रु दस रु. का टिकट
है उसमें आदमी कहाँ से घूमने जा सकेगा।
जिनके पास चार फैमिली है अगर वो चिड़ियाघर
जाता है तो कम से कम 200 रु. किराया
लग जाएगा। एक बस दो बस बदलने में
150-200 रु. किराया लग जाता है। खाने
के लिए कुछ चाहिए। आदमी मुँह बाँध के तो
आएगा-जाएगा नहीं। साथ में बच्चे है तो
बोलेंगे पापा ये चीज़ खिलाओ वो चीज़ पिलाओ।
ऐसे में आदमी सोचता है कहीं घूमने मत
जाओ। घर में ही रह जाओ। ये सब शौक
पूरा नहीं होता। हम लोग fourth class के है
govt भी उन्हें वहीं fourth class पर ही
रखना चाहती है। उनको पढ़ाने की कोशिश।

भी नहीं करती।

— तो आप घर छोड़ कर क्यों आए थे ?

मैं घर छोड़ कर नहीं आया था। पिताजी ने भगा दिया। मैं आठवीं तक पढ़ा हूं। आठवीं में पढ़ता था तो मैं फेल होगया। पिताजी ने स्वंयकु में आकर कहा अब बहुत पढ़ लिया ऐसा है कि परदेश में जाकर तुम कमाओ। उस time तो गरीबी बहुत ज्यादा थी अब तो हर जगह रोटी खा रहे हैं लोग। मजदूरी भी मिल जाती है। पहले काम था नहीं मजदूरी भी नहीं मिलती थी। अब हम आए हैं अपना पेट चल रहा है तो सोचते हैं कि अपने बच्चे को पढ़ायें उनको आगे बढ़ाएं।

— अच्छा जब आप यहां आए तो क्या आपके गॉव से काफी लोग दिल्ली आ रहे थे इसलिए आपके पिताजी ने आपको दिल्ली भेज दिया ?

नहीं, ज्यादा नहीं आ रहे थे। ये है कि दो-चार लोग बाहर थे। हर माँ बाप चाहता है और आज भी है कि लड़का बड़ा होगा तो बाहर जाएगा हजार-पाँच सौ कमाएगा तो घर का खर्च चलेगा। यही सोचकर हमें भी भेज दिया।

— माँ बाप के बारे में बताएं

हमारे पिताजी लकड़ी का काम करते थे। लकड़ी चीर-चीर कर गुजारा करते थे। थोड़ी बहुत खेती थी। उन्होंने हमारे चाचाजी को पढ़ाया उनकी अच्छी सर्विस लगी। उस समय लोग पढ़े लिखे कम होते थे। आज तो लोग पढ़ लिख कर भी बेरोजगार है। ये 1964-65 की बात है हमारे चाचा जी superintendent थे उसके बाद retire हो गये।

– अभी लोग साथ है

नहीं अलग अलग है। चाचाजी अलग हो गये। दादा-दादी तो हैं नहीं। पिताजी भी नहीं हैं। माताजी अभी हैं।

– कुछ पढ़ाई लिखाई के बारे में बताइये।

पढ़ाई लिखाई तो बहुत जरूरी है। पढ़ाई लिखाई के लिए किसी न किसी को त्याग तो करना ही होगा। हमें भी किसी ने बताया। हम त्याग करें या बच्चे त्याग करें या उनके बच्चे त्याग करें। बगैर त्याग करे कोई भी चीज तो हासिल नहीं होती। इसलिए विजय को हमने त्याग करने को कहा। भाई हमने कहा जब तक आप पढ़ाई करके कमाने नहीं लगोगे हम आपकी शादी नहीं करेंगे अब अगर अभी शादी कर दें तो पढ़ाई कहां से करेंगे। परेशानी बढ़ जाएगी। सोचेंगे पापा हमें तो ढंग से खिला नहीं रहे तो फैमिली को कहां से खिलाएंगे। फिर और परेशानी बढ़ेगी।

इसलिए परेशानी तो हमें अभी उठानी ही पड़ेगी।

– अच्छा विजय तो दिल्ली में अभी आया है उसके पहले कहाँ पढ़ाई करता था और बचपन से वह पढ़ाई में कैसा रहा है। उसके बारे में कुछ बताइये।

हमारे तीनों बच्चों का जन्म यहीं हुआ है दिल्ली में पाँचवी तक यहीं पढ़ा उसके बाद हम गाँव में रहने लगे तो गाँव चला गया। वहीं से 12वीं तक पढ़ाई किया। फैज़ाबाद कैम्पस में अवध विश्वविद्यालय से BA किया और अभी दिल्ली विश्वविद्यालय से MA कर रहा है।

— अभी जो विजय की पढ़ाई चल रही है, उससे आप को क्या लगता है, या अभी तक जो उसकी पढ़ाई हुई है उससे आपको क्या लगता है आगे चलकर, कुछ, करेगा। और आप दोनों के संबंध कैसे रहे है इसके बारे में कुछ बताइये —

हमारे संबंध बहुत अच्छे हैं। मैंने उसे बता रखा है मैं उसे IAS, PCS बनाना चाहता हूँ और विश्वास है वह जरुर बनेगा। मैं अपना सब कुछ बेचकर दाँव पर लगा सकता हूँ बस उसे पढ़ाई करना है मैंने उसे बता रखा है। बच्चे को नजरिया देख कर हौसला होता है। हमें भी खुश है कि हमारा पैसा बरबाद नहीं हो रहा है। हमारा क्या है हमें तो मर मरा जाना है पर है कि इनके बच्चे सुखी रहेंगे और हमारा बुढ़ापा भी आराम से शायद कट जाए।

— आप जो अभी तक काम कर रहे थे वह क्या लगता है एक खाने पीने का मात्र जरिया था या उससे भी आगे कुछ है। कैसा सोचते है आप इसके बारे में?

नहीं, अभी तो हम जो कुछ भी बनाए हैं नौकरी से बनाए हैं आगे और कुछ तो शायद ही बना पाएं क्योंकि काम तो बिलकुल बंद हो गया है। कमाने खाने का जरिया तो बिलकुल सही है क्योंकि कमाना खाना तो हर किसी को है पर वो कुछ बना नहीं सकता। चाहते तो हम भी है कि कुछ बनावाएं ताकि नाम हो। मैंने भी एक मंदिर बनवा रखा है माता जी का, दुर्गा पूजा भी करवा है पर आज कल तो पूरी परेशानी है। अब जब रोजी ही नहीं है

तो, दूसरा भी साथ नहीं दे रहा है। आदमी बेरोजगार हो जाने पर सब कुछ भूल जाता है। बुरे वक्त में कोई साथ नहीं देता।

- अच्छा, इतने दिन आपने काम किया है आपने तो कोई राजनैतिक योगदान रहा आपका पार्टी में, मिल में या यहाँ-वहाँ कहीं भी---

हूँ, राजनीति में तो नहीं योगदान रहा पर मैं BJP को like करता हूँ मैं उसका यहाँ पर कार्यकर्ता हूँ member हूँ। उसका अखबार आता है हम पढ़ते हैं और देखता हूँ कि बाबा साहब ने--- जैसे आजकल है एक वी पी सिंह वे झुग्गी झोपड़ियों में तीन-तीन रातें बिता सकते हैं जैसे आजकल हमारे झुग्गी झोपड़ियों में लोग हैं, और कोई नेता निकल जाए। आज कल के time में जैसे Ambedkar साहब थे गरीब आदमी को लेकर चले थे उन्होंने जो संविधान लिखा है उस हिसाब से अगर कोर्ट कचहरी बनाई है तो गरीब आदमी के लिए बनाई है। पर गरीब आदमी को ऐसे भर देते हैं जैसे गाड़ी में भूसा भर देते हैं, और अगर एक MP या MLA को जेल भेजता है तो उसके लिए Air condition कमरा होता है। जेल सबके लिए बराबर होना चाहिए इसलिए हम BJP को like करते हैं। सबकुछ बराबर होना चाहिए छोटा हो या बड़ा।

- ऐसे labour union में

नहीं, labour union में हमारा कोई योगदान नहीं है।

- तो ये जो बाकी union हैं वो समस्याओं को कहाँ तक सुलझाते हैं?

~~T/o~~
~~The Principal,~~
~~Ramjas College~~

इसके बारे में ज्यादा knowledge नहीं है ये सब छोटी-छोटी factory में होता है। Union भी बेवकूफी है। उसमें जो union के leader हैं वे मालिक से भी पैसा खाते हैं और इधर भी खाते हैं। पर हमारी फैक्ट्री में तो ऐसा हुआ नहीं इसलिए हमें ज्यादा knowledge नहीं है।

– अच्छा अभी जो आपकी स्थिति है और जहां तक आप पहुंचे हैं नांगलोई में भी आपने घर बनाया यहां भी बनाया उसमें विजय की मां का कितना योगदान रहा?

योगदान तो बहुत रहा। हम साथ साथ रहते थे। सुख बहुत था। किसी बात का tension नहीं था। फिर हम अभी अलग हो गये हैं। मां और बच्चे गांव में हैं। बाप बेटे यहां हैं तो थोड़ा सोचना पड़ता है उनके बारे में। टेंशन हो जाता है थोड़ा। पहले हम साथ रहते थे अभी तो अलग हो गये हैं ना।

– तो अलग-अलग क्यों हो गये?

ऐसा है कि हमें ससुराल में भी जमीन मिली और वहां कोई देखने वाला है नहीं। तो वे एक लड़का और लड़की के साथ वहां रहती है और हम एक बाप-बेटे यहां रहते हैं।

– आप को जो पैसे मिलते हैं उसे आप किस तरह खर्च करते हैं।

2500 रु. मिलते हैं उसमें

1000 रु. विजय को ही देना होता है 500-700 रु. हमें भी चाहिए कम से कम ज्यादा ही चाहिए हमारा भी खर्चा है खाने-पीने के लिए बीड़ी पान मुंह बांध के तो नहीं रह सकता और पीछे हमारे बच्चे भी गांव में हैं उनको 500-600 रुपया देना पड़ता है इस तरह से हमारी बचत नहीं होती। बस गुजारा चल जाता है।

— राशन वगैरह गांव से लाते हैं,

नहीं, यहीं बनिये से उधार लाते हैं. पेमेंट मिलती है तब चुकाते हैं। कुछ अब दे दिया कुछ बाद में कोई मना तो है नहीं। बस काम चल जाता है।

— अच्छा, जब आपका खाली वक्त होता है वह कैसे कटता है।

उ. खाली वक्त में घर पर पड़े रहते हैं। किसी भी यार दोस्त के यहां जाएंगे तो 100-50 का खर्चा हो ही जाता है गाड़ी भाड़ा वगैरह खर्चा हो ही जाता है। इसलिए कहीं आना जाना नहीं होता

— फिर समय कैसे कटता है।

चार पांच आदमी बैठ जाते हैं ताश खेलते हैं timepass हो जाता है नहीं तो सो जाते हैं कहीं आना जाना नहीं होता है

— तो अभी जब आपका काम बंद है तो किसी और जगह कुछ करने का सोच रहे हैं।

सोच तो रहा हूं पर काम मिलता ही नहीं है अभी बैठा हूं बेरोजगार। काम अभी मिल नहीं रहा है। लड़की की शादी में गांव गया था, 15-20 दिनों से अभी यहां हूं। काम मिलेगा तो कर लेंगे। नहीं मिलेगा तो बैठे तो हैं ही अपने घर में किसी को किराया तो देना पड़ता नहीं है यही बचत है।

\- यहाँ झुग्गियों में किराया भी लगता होगा।

हाँ किराया भी लगता है। चार पाँच सौ रुपये लगते हैं एक कमरे का

\- अच्छा, झुग्गी झोपड़ियों के बारे में बताइये। कब बनी, आपको प्लाट कब मिला कैसे मिला और सरकार का क्या हाथ रहा - - -

नहीं ये तो Private Plot है लोगों ने 30-35 साल से कब्जा कर रखा है। मैं यहाँ 80-82 से हूँ और सबने अपना-अपना घर बना रखा है। Private प्लाट है। govt ने एक दो पानी का connection दे रखा है। बहुत दिक्कत है मोतीनगर से पानी भर कर लाना पड़ता है। ये सब परेशानी है।

\- तो govt ने इसे legal नहीं किया है?

नहीं किया है अभी तक तो।

\- तो क्या Party जिसकी जमीन है वह हटायेगी नहीं।

पार्टी का कोई देखनेवाला है ही नहीं मर मरा गया है। govt अगर चाहे तो व्यवस्था कर सकती है। यहाँ 3000- आदमी हैं व्यवस्था ज्यादा से ज्यादा 1200 लोगों की है। लोग किराये पर रहते हैं। एक एक झुग्गी में 5-5 लोग रहते हैं। इसमें govt का वोट बैंक है। अगर इनको हटा कर अलग-अलग अच्छी जगह रख देंगे, तो घाटा उन्हीं को है। यहाँ का वोट बैंक भी जायेगा और ज्यादा जगह भी देनी होगी। इसलिए हटाती भी नहीं। गंदगी में पड़े हैं सब। निकलने का भी रास्ता नहीं है। एक ही गली है उसी से होकर सभी निकलते हैं।

- अच्छा, अभी जो फैक्ट्रियाँ बंद हुई हैं उसमें क्या आसपास की बंद हुई हैं या फिर यहाँ के लोग जहाँ काम करते हैं वहाँ भी बंद हुई हैं।

नहीं नहीं हमारे इस area में मोतीपुर industrial area में Bharat mill बंद हुई है हमारी factory Campa Cola बंद हुई है Rubber की जो factory थी वो अभी चालू है, और जिनकी कंपनी बंद हो गई है कुछ लोग तो यहाँ हैं जिनका अपना घर है पर जो लोग किराये पर हैं उनमें कुछ लोग तो चले गये हैं क्योंकि जब काम नहीं है तो क्या करेगा आदमी। प्रभाव तो पड़ता ही है काम बंद होने पर ।

- अच्छा, ये बताएं कि ये जो factories बंद हुई हैं तो इसके पीछे सरकार का क्या इरादा हो सकता है। क्या ऐसा है कि प्रदूषण सिर्फ factory वाले ही फैलाते हैं या फिर कार वाले भी प्रदूषण करते हैं। आपको इन सब के पीछे क्या चक्कर लगता है?

सबसे पहले तो govt ही सबसे ज्यादा प्रदूषण फैला रही है। आजकल इतनी गाड़ियाँ हो गई हैं कि आप अगर पैदल निकलना चाहो तो नहीं निकल सकते। इतनी गाड़ियाँ हो गई हैं कि आप अगर निकलना चाहो और एक चौराहे पर खड़े हो जाओ तो इतना धुआँ होता है कि आदमी मुँह बंद करके निकलता है। अब उससे भी तो प्रदूषण होता है। फैक्ट्री होती है तो उससे आदमी को रोजगार मिलता है आदमी को रोजगार तो चाहिए ही। तो, आदमी फैक्ट्री से कमाता खाता है अब उससे प्रदूषण आदमी में आ गया। अब यहाँ फैक्ट्री ले गये हैं सरकार को चाहिए

मजदूरों को भी वहाँ जमीन दे। तब तो अच्छा है। अब अगर जो आदमी मोतीपुर में रहता है और यहाँ काम करता है, उसकी फैक्ट्री आप गाजियाबाद बॉर्डर पर कर देते हो तो 100 रु. की दिहाड़ी में 150 रु. तो गाड़ी का किराया लग जाएगा। इतने में बीबी-बच्चों को कहाँ से खिलाएगा यहाँ से मकान बेचकर कहीं और चला जाएगा या फिर कोई और छोटा मोटा काम करेगा। प्रदूषण की तो आम बात है। ऐसे ही। प्रदूषण तो हर जगह है। हमारी factory में तो प्रदूषण नहीं है फिर भी बंद है। govt को हम Supreme Court तक भी गये हैं और सभी नेताओं को भी बोला है पर फिर भी बंद है। मालिक उसको नहीं चला सकता। Limited factory है सरकार ही चला सकती है। govt. उसको तो चलाती नहीं है। आजकल तो सरकार जितनी भी Limited factory है उनको तो बंद कर रही है फिर आपको अपनी factory के बारे में क्या लगता है।

जो govt. अपनी फैक्ट्री बंद कर रही है तो कई हमारी तो पहले से ही बंद है। अगर बंद कर रही है तो पर पर हमारी अगर खुल जाती है तो हम भी रोजगार पा जाते। अपनी नौकरी भी चलती रहती। अब तो काफी दिनों से लगे हैं बचपन से तो पता था नहीं कि ऐसा भी होगा नहीं तो हम लगाते ही नहीं। उस समय तो और भी काम था कुछ और कर लेते। अब तो कुछ और भी नहीं कर सकते। मेरे मन में कभी भी ऐसा नहीं आया कि रिश्वत देकर नौकरी लूँ। नहीं तो तब में 50 रु. देता और कहीं अच्छी जगह नौकरी पा जाता। पर कभी ऐसा सोचा ही नहीं। उस समय जो 7वीं 8वीं भी पढ़ा होता था क्लर्क की नौकरी लग जाती थी। हमने कभी सोचा ही नहीं। हमने कहा नौकरी करेंगे तो अपने बूते पर करेंगे नहीं तो नहीं करेंगे। मैं अपने लड़के

को भी यही कहा है। पर, आजकल रिश्वत इतनी चलती है कि कहीं २ लाख मांगते हैं तो कहीं चार लाख रुपये। एक चपरासी की नौकरी के लिए भी 50 हजार रु. चाहिए। इतने पैसे हम कहां से लाए हमारे पास तो है नहीं। अगर होंगे भी तो इतने पैसे का कोई धंधा कर लेंगे। और जो आज रिश्वत देगा वो क्या करेगा, बेईमानी ही करेगा। हमें बेईमानी करनी नहीं है। हम बेईमान नहीं हैं। हमें ईमानदारी का खाना चाहते हैं। जो आदमी रिश्वत देगा वह बेईमानी करेगा ही। वो कहेगा मैंने 50 हजार रुपये दिये हैं 50 लाख रुपया कमाऊँगा।

— एक बात बताइये, अभी आप जितने दिनों तक यहां है तब तक तो ठीक है पर क्या आप वापस जाएंगे?

हां वापस जाऊंगा। कंपनी के काम के बाद वापस आ जाऊंगा। पर अभी तो विजय की पढ़ाई है। जब हाथ में कुछ पैसे आ जाएंगे तो घर में भी कुछ काम करेंगे। एक लड़का जब बाहर रह कर कमाएगा तो कुछ सहारा भी हो जाएगा। इरादा जो है उसे यहां पढ़ने के लिए भेज देंगे तो घर भी देखना हो तो मैं घर देखूंगा। घर देखना भी जरूरी है और पढ़ाई करना भी जरूरी है।

— अच्छा धन्यवाद विश्वनाथ जी।